साधकों का
मासिक प्रेरणा

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2555, आषाढ़ पूर्णिमा, 15 जुलाई, 2011 वर्ष 41 अंक 1

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

सब्बदानं धम्मदानं जिनाति, सब्बरसं धम्मरसो जिनाति।
सब्बरतिं धम्मरति जिनाति, तण्हक्खयो सब्बदुक्खं जिनाति॥
– धम्मपद ३५४, तण्हावग्गो

धर्म का दान सब दानों को जीत लेता है (सब दानों में श्रेष्ठ है)। धर्म का रस सब रसों को जीत लेता है (सब रसों में श्रेष्ठ है)। धर्म में रमण करना सभी रमण-सुखों को जीत लेता है (सब रतियों में श्रेष्ठ है)। तृष्णा का क्षय सब दुःखों को जीत लेता है (अर्थात, सबसे श्रेष्ठ है)।

मेरे सत्यनिष्ठ गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन

भगवान बुद्ध **सच्चनाम** भी कहलाते थे जो कि उनके लिए उचित संबोधन ही था। पालि भाषा में **'नाम'** कहते हैं चित्त को। अतः **सच्चनाम** का अर्थ हुआ वह जिसके चित्त में सत्य ही सत्य समाया हो।

मेरे परमपूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन भगवान बुद्ध की विपश्यना शिक्षा के संपर्क में आने के पहले ही स्वभाव से सत्यनिष्ठ थे। वे बचपन से ही अत्यंत कुशाग्र बुद्धि के धनी होने के कारण मैट्रिक की परीक्षा में सारे म्यंमा में प्रथम आये और सरकार की ओर से उन्हें वजीफा मिला। परंतु उनका परिवार साधारण आय पर चल रहा था। अतः आगे की पढ़ाई के लिए इस वजीफे का लाभ न उठा कर, परिवार के लिए कुछ कमा सकने के उद्देश्य से उन्होंने इधर-उधर नौकरी की, जिससे थोड़ी-बहुत आय होती रही। लेकिन उनके मन में अकाउंट (लेखा-जोखा) के प्रति बहुत आकर्षण था। इसे कालेज में न पढ़ पाने के कारण घर पर ही अकाउंट संबंधी पुस्तकें पढ़ते रहे और उसमें कुशल हुए। तत्पश्चात उन्हें अकाउंटेंट जनरल की ऑफिस में एक क्लार्क की नौकरी मिली, जिससे उन्हें प्रसन्नता हुई।

कुछ समय बाद उन्होंने सयातैजी के विपश्यना केंद्र में जाकर विपश्यना सीखी और पहले ही शिविर में इस विद्या की गहराइयों का अनुभव किया। लौटकर आये तो उन्हें अकाउंटेंट जनरल ऑफिस का सुपरिंटेडेंट बना दिया गया। वे जब से इस कार्यालय में कार्यरत हुए तभी से देख रहे थे कि यहां भ्रष्टाचार का बोलबाला था। लगभग सभी कर्मचारी घूसखोर थे। परंतु इस धर्मनिष्ठ व्यक्ति ने अपना कार्य करते हुए पहले भी कभी किसी से एक पैसे की घूस नहीं ली, और अब तो वे विपश्यी हो गये। सत्यजीवी और सत्यनिष्ठ भला घूस कैसे लेता?

सन १९४२ में बर्मा पर जापानी हमला हुआ। जापानी विमानों ने मांडले की रेल्वे स्टेशन पर बम गिरा कर उसे तहस-नहस कर दिया। ऊ बा खिन रेल्वे बोर्ड के अकाउंट्स ऑफिसर थे। उन्होंने देखा कि स्टेशन की तिजोरी सुरक्षित है। रेल्वे के उच्च अधिकारी बर्मा छोड़कर विमान से भारत जाने में लगे थे। भागती हुई सरकार के पैसे यदि ले लेते तो उन्हें कौन पूछता? लेकिन उन्होंने चाभी से तिजोरी खोल कर पैसे निकाले, कार से दो घंटे की यात्रा करके, हवाई अड्डे की ओर जाते हुए रेल्वे के बड़े अंग्रेज अधिकारी को पैसे सौंप कर ही चैन की सांस ली। पराये धन का एक पैसा भी अपने पास रखने के लिए वे तैयार नहीं थे, भले उस समय उनकी लड़की बीमार थी। ऐसे थे निःस्वार्थ, निस्पृह सयाजी ऊ बा खिन!

समय आया, ब्रह्मदेश स्वतंत्र हुआ। स्वतंत्र बर्मी सरकार ने ऊ बा खिन को **अकाउंटेंट जनरल** बना दिया। उनके कार्यालय में जो घूसखोरी चलती थी उससे वे पूर्णतया अवगत थे। अतः इस विभाग का अध्यक्ष होने पर उन्होंने निर्णय किया कि वे इस दुर्व्यवस्था का अंत करेंगे। परंतु किसी घूसखोर पर केवल सख्ती बरतने से वह कभी नहीं सुधरता। अतः उन्होंने अपने कर्मचारियों को प्यार से समझा-समझा कर विपश्यना में सम्मिलित किया।

इसके लिए अपने कार्यालय का एक बड़ा कक्ष खाली करवा कर उसे विपश्यना केंद्र बनाया। इसी में विपश्यना के शिविर लगाने लगे। अब विपश्यना के कारण कार्यालय के कर्मचारियों में बदलाव आते-आते, वहां पर कोई घूसखोरी नहीं रह गयी। धीरे-धीरे ए.जी. ऑफिस का सारा ढांचा ही बदल गया। इस बदलाव को देख कर लोगों में चर्चा होने लगी। सभी बहुत प्रसन्न हुए।

देश का प्रधानमंत्री स्वयं बहुत ईमानदार था। वह चाहता था कि उसका शासन भी ईमानदारी से ही चले। परंतु वह लाचार था। अनेक प्रकार के प्रयत्न करके भी उसे सफलता नहीं मिली। तब उसने ऊ बा खिन को याद किया और उनसे कहा कि वे अपने ए.जी. ऑफिस का कार्यभार संभाले रखें लेकिन साथ-साथ अन्य तीन विभागों में भी अपनी सेवा दें। ऊ बा खिन ने इसे स्वीकार किया। अपनी ऑफिस का काम पूरा करके वे एक-दो घंटे अन्य विभागों में भी सेवा देने लगे। सत्यनिष्ठ व्यक्ति कर्मनिष्ठ भी हो जाता है। उसकी कार्यक्षमता बढ़ती है। अतः वे उन तीनों कार्यालयों के कार्य भी समय पर पूरा करने लगे और वहां के कर्मचारियों को भी विपश्यना की ओर प्रेरित करने लगे।

सरकारी नियमों के अनुसार उन्हें अपने विभाग से पूरी तथा अन्य तीनों विभागों से एक-एक चौथाई वेतन मिलनी थी। परंतु इस सत्यनिष्ठ व्यक्ति ने इसे स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा मैं नित्य आठ घंटे ही काम करता हूं। इस विभाग में करूं या उस विभाग में। अतः मैं अधिक वेतन क्यों लूं?

उन दिनों देश में **स्टेट अग्रीकल्चर मार्केटिंग बोर्ड** (SAMB) सरकार का सबसे बड़ा व्यावसायिक संस्थान था, जिसे देश भर का

सारा चावल खरीदने और बेचने की मोनोपोली प्राप्त थी। यह विभाग जिन कीमतों पर खरीदता उसके लगभग चौगुने दाम पर विदेश की सरकारों को बेच कर निर्यात करता। अरबों के इस वार्षिक धंधे में करोड़ों का लाभ होने के बदले यह विभाग करोड़ों का घाटा दिखाता। कार्यालय में धोखेबाजी स्पष्ट थी। इसे सुधारने के लिए प्रधानमंत्री ने सयाजी ऊ बा खिन को सैम्ब (SAMB) का अध्यक्ष बनाने का निर्णय किया। परंतु सत्यधर्मी ऊ बा खिन ने यह पद तभी स्वीकार किया जबकि उनके निर्णयों पर कोई हस्तक्षेप न करे और वे स्वतंत्ररूप से इस संस्थान का संचालन करते रहें। प्रधानमंत्री ने उनकी यह शर्त स्वीकार की। परंतु इस निर्णय से SAMB के कार्यालय में तहलका मच गया। वहां के जो बड़े अधिकारी थे वे भ्रष्टाचार में सबसे आगे थे। वे इस निर्णय से घबरा उठे और उन्होंने सामूहिकरूप से हड़ताल करने की घोषणा कर दी।

ऊ बा खिन निर्बैर थे, निर्भय थे और सुदृढ़ कर्मनिष्ठ थे। उन्होंने ऑफिसरों की हड़ताल को दृढ़तापूर्वक स्वीकार किया और अपने विभाग के छोटे कर्मचारियों के साथ सफलतापूर्वक काम करना शुरू कर दिया। वे रंचमात्र भी विचलित नहीं हुए। हड़तालियों ने तीन महीने तक प्रतीक्षा की। तदनंतर उनका धैर्य टूट गया और उन्होंने सयाजी ऊ बा खिन के पास जाकर क्षमा याचना करते हुए पुनः काम पर लग जाने की इच्छा व्यक्त की। परंतु ऊ बा खिन नहीं माने। उन्होंने कहा-- तुममें से जो व्यक्ति विपश्यना का शिविर करके आयेगा, उसे ही काम पर लिया जायगा। तब तक इन्याम्याइंग स्ट्रीट में ऊ बा खिन का विपश्यना इंटरनेशनल मेडीटेशन सेंटर स्थापित हो चुका था। वहां विपश्यना करने पर धीरे-धीरे घूसखोर ऑफिसरों का भी कल्याण हुआ तथा देश का भी। जो सैम्ब (SAMB) हर वर्ष करोड़ों का नुकसान बताता था, वह अब करोड़ों का मुनाफा बताने लगा।

इतने सारे महत्त्वपूर्ण कार्य सफलतापूर्वक संपन्न करने के बाद ५५ वर्ष की उम्र में सयाजी ऊ बा खिन के रिटायर होने का समय आया। परंतु सरकार ऐसे ईमानदार शासनाधिकारी को कैसे रिटायर होने देती? अतः उनकी सेवा का समय बढ़ाया जाता रहा। यह १२ वर्षों तक बढ़ा। फिर ऊ बा खिन ने बलपूर्वक सभी सरकारी उत्तरदायित्वों से छुटकारा ले लिया कि अब केवल धर्मसेवा का काम करना है।

जब तक उन्होंने सरकारी कार्यभार संभाल रखा था, तब तक सरकार ने उनकी सेवा के लिए एक कार दे रखी थी। अब रिटायर होने पर अपने धर्मनिष्ठ स्वभाव के आदर्शानुसार निर्णय लेते हुए उन्होंने उसे सरकार को लौटा दी। जब वे सरकारी कार्य नहीं करते तब उस कार का उपयोग कैसे करते भला? यद्यपि सरकार चाहती थी कि सेवामुक्त होने पर भी वे कार का उपयोग करते रहें, परंतु वे नहीं माने। इसके बाद जब कभी उन्हें दांत के डॉक्टर के पास अथवा किसी धर्मसभा में जाने की आवश्यकता होती तब अक्सर वे हमें सूचित करते और मेरा पुत्र श्रीप्रकाश, जिसे वे अपने प्रिय पुत्र के समान प्यार करते थे, उनकी सेवा में चला जाता। अपनी स्कूल की पढ़ाई में व्यस्त रहते हुए भी वह उनकी सेवा करके बहुत प्रसन्न होता। उसे गुरुदेव के प्रति अत्यंत श्रद्धा थी और गुरुदेव को भी उसके प्रति उतना ही प्यार था। उसने उनके पास १०-१० दिन के आठ शिविर भी किये थे। इसके अतिरिक्त रंगून में रहने वाले मेरे परिवार के छोटे-बड़े सभी सदस्यों ने गुरुदेव से प्राप्त हुई विपश्यना का लाभ उठाया था। भारत में रहने वाले मेरे बड़े भाई बालकृष्ण ने भी रंगून आकर एक शिविर का लाभ उठाया।

मेरे अनेक जन्मों के पुण्य के कारण ही इस सात्विक धर्मपुरुष से मेरा संपर्क हुआ। उनसे धर्मदान मिला। चौदह वर्षों तक वे मुझे परियत्ति और पटिपत्ति यानी सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक धर्म में पुष्ट करते रहे। मेरे प्रति उनके मन में न जाने क्या लगाव था! स्पष्टया अनेक जन्मों का लगाव रहा होगा। जिस प्रकार उन्होंने मुझे धर्म में पुष्ट किया, वह मेरे कल्याण का कारण बना। जब मुझे भारत जाने का पासपोर्ट मिला तब मेरे मन में जो प्रसन्नता हुई, उससे बढ़ कर उनका मन उल्लास से भर गया।

हम जानते थे कि भारत के प्रति उनके मन में अपार स्नेह था। जो अनमोल कल्याणी विपश्यना विद्या और भगवान बुद्ध की संपूर्ण पवित्र वाणी बर्मा को भारत से प्राप्त हुई थी, लेकिन अब ये दोनों भारत में सर्वथा विलुप्त हो चुकी थीं। हम उनके मुँह से निकलते हुए ये शब्द बार-बार सुना करते थे कि भारत ने हमें जो अनमोल धर्मरत्न दिया, वह हम पर भारत का असीम ऋण है। अब समय आ गया है। हमें यह ऋण चुकाना है। भारत को भी इसकी अत्यंत आवश्यकता है। वे यह भी कहते थे कि यह ऋण स्वयं मैं चुकाऊंगा। हम उनके मुँह से निकले हुए ये शब्द भी बार-बार सुनते थे कि अब विपश्यना का डंका बज चुका है। मुझे शीघ्र से शीघ्र भारत जाकर वहां बुद्ध की कल्याणी विपश्यना का पुनर्जागरण करना है। परंतु अपने कठोर नियमों से बँधी हुई तत्कालीन म्यंमा सरकार ने उन्हें भारत जाने के लिए पासपोर्ट नहीं दिया।

किसी भी कारण से जब मुझे पासपोर्ट प्राप्त हुआ तब मुझसे अधिक उन्हें प्रसन्नता हुई। उन्होंने कहा कि अब मेरी ओर से यह ऋण तुम चुकाओगे। जून १९६९ में पूज्य गुरुजी ने मुझे अपना उत्तराधिकारी बनाकर, इस प्राचीन धर्म-परंपरा के आचार्यपद पर स्थापित किया और कहा कि इस हैसियत से अब तुम मेरा काम पूरा करोगे। यह सुन कर मैं भौचक्का रह गया। मेरे जैसा साधारण व्यक्ति उनकी इस महान धर्मकामना को कैसे पूरा कर सकेगा? इस पर उन्होंने दृढ़ शब्दों में कहा कि तुम अकेले कहां जा रहे हो? तुम्हारे साथ मैं जा रहा हूं, धर्म जा रहा है।

उनके इन आश्वासनभरे शब्दों के बल पर मन में हिचकिचाहट होते हुए भी मैं भारत चला तो आया परंतु मन में यह संकोच था ही कि इस महान कार्य के लिए यहां कौन मेरी सहायता करेगा? यहां रहने वाले मेरे सभी भाई-बंधु आनंदमार्ग में आकंठ डूबे हुए थे। विपश्यना के प्रसारण में मैं उनके सहयोग की क्या उम्मीद करता? मैंने यह भी देखा कि संपूर्ण भारत में मेरे जो मित्र और परिचित थे उनकी सूची बनायी तो उनकी संख्या १०० तक भी नहीं पहुँची। ऐसी अवस्था में संशय था कि मुझे किसका सहयोग मिलेगा और इस महान कार्य में कैसे सफलता मिलेगी?

लेकिन सचमुच गुरुदेव और उनके दिये हुए सत्यधर्म का ही प्रभाव था कि १२ दिन बीतने पर ही पहला शिविर लग गया और फिर तो अविरल रूप से धर्म की गंगा बहने लगी। अब तो भारत ही नहीं, बल्कि सारे विश्व में यह धर्मगंगा बहती ही जा रही है।

भारत आने पर सर्वत्र हिंदी में ही शिविर लगते रहे। जैसे धाराप्रवाह प्रवचन मैं हिंदी में दे सकता था, वैसे अंग्रेजी में दे सकना मेरे लिए असंभव था। परंतु जब अंग्रेजीभाषी साधकों की संख्या बढ़ी तब उनकी ओर से डलहौजी में आकर अंग्रेजी में एक

शिविर लगाने की मांग उठने लगी। परंतु मैंने मना कर दिया। तब यह जान कर गुरुदेव ने मुझे टेलीफोन पर डांटते हुए कहा कि शिविर तुम थोड़े लगा रहे हो, मैं लगा रहा हूं, धर्म लगा रहा है। जाओ और शिविर लगाओ। उनके आदेश का पालन करते हुए १९७१ में मैंने अंग्रेजी भाषा का पहला शिविर लगाया, जिसमें सायंकालीन हिंदी प्रवचन की भांति धाराप्रवाह अंग्रेजी प्रवचन देकर मैं स्वयं आश्चर्यचकित हुआ।

इस प्रकार के और न जाने कितने प्रसंग हुए, जिनसे स्पष्ट हुआ कि विपश्यना मैं नहीं सिखा रहा, गुरुदेव ही सिखा रहे हैं। मैं ऐसे कल्याणकारी गुरुदेव के उपकारों को कैसे भूलूं? उनके प्रति मेरी श्रद्धा और कृतज्ञता दिनोंदिन संवर्धित होती रहती है। अब मैं ८८वें वर्ष में से गुजर रहा हूं। विश्व भर के पंद्रह लाख से भी अधिक लोगों ने विपश्यना के शिविरों में भाग लिया है और उससे अत्यंत लाभान्वित हुए हैं। इस कारण जब कभी वे मुझसे मिलते हैं अथवा पत्र लिखते हैं तब मेरे प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हुए विह्वल होते हैं। ऐसी अवस्था में उनसे अधिक विह्वल मैं हो जाता हूं कि वे मेरे प्रति इतनी कृतज्ञता क्यों प्रकट कर रहे हैं? सयाजी ऊ बा खिन के प्रति क्यों नहीं? उन्हें धर्म तो पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन ने ही दिया है। मैं तो निमित्त मात्र हूं। उनके द्वारा भेजा हुआ एक धर्मदूत मात्र हूं। मुझे उनसे जो कुछ प्राप्त हुआ वही उनकी ओर से लोगों को बांट रहा हूं। कृपा उनकी है। ऐसे समय मेरे मन में हमारे यहां के एक हरियानवी गीत के ये बोल उभरते हैं--

हे भगवान! तेरी माया का, कोन्या पाट्या बेरा।
धनवाना नै कर्या निरधना, निरधन घर धन गेरा।।

अब पता नहीं कोई ऐसा ईश्वर है भी या नहीं, जो निर्धनों के घर धन की बौछार कर देता है। लेकिन एक ऐसा धर्मनिष्ठ धर्मेश अवश्य हुआ, जिसने मेरे निर्धन जीवन में धर्मधन की बौछार कर दी। किसी निर्धन को सांसारिक धन-संपदा मिल भी जाय तो वह देर-सबेर समाप्त हो जाती है। परंतु इस धर्मेश की दी हुई अमित धर्मसंपदा जीवनभर बांटते रहने पर भी कभी कम नहीं होती, बल्कि बढ़ती ही जाती है।

वस्तुतः धर्म तो उनका ही दिया हुआ है। मेरे माध्यम से वे ही बांट रहे हैं। फिर भी मुझे ही इतना महत्त्व क्यों दिया जा रहा है? इस प्रसंग में भी कभी-कभी हमारे यहां के एक राजस्थानी गीत के ये बोल मन में उभरते हैं --

तेल जलै बाती जलै, नाम दिये को होय।

वस्तुतः जलता तो है तेल और उसमें डूबी हुई बाती। उनके जलने से ही प्रकाश फैलता है, परंतु लोग कहते हैं-- ''देखो, दीपक जल रहा है और उसका प्रकाश फैल रहा है!'' दीपक तो तेल और बाती का वाहक मात्र है। वह न जलता है न प्रकाश पैदा करता है। मैं भी इसी प्रकार परम पूज्य गुरुदेव का वाहक मात्र हूं। मेरे भीतर उनका दिया हुआ जो सद्धर्म है वही बाहर प्रकाशित हो रहा है। इस कारण जो लोग कहते हैं कि प्रकाश मैं बांट रहा हूं, यह सही नहीं है। वस्तुतः प्रकाश गुरुदेव का ही है, उनके दिये हुए सद्धर्म का ही है, जो मेरे माध्यम से प्रकट हो रहा है, फैल रहा है।

जितने साधक-साधिकाएं इस धर्म ज्योति से लाभान्वित हुए हैं, वे ही नहीं, बल्कि यह धर्मदीप आगामी २००० वर्षों तक जलता रहेगा और भविष्य में भी जो साधक-साधिकाएं इस साधना द्वारा लाभान्वित होते रहेंगे, वे सभी पूज्य गुरुदेव के प्रति असीम श्रद्धा और कृतज्ञता से विह्वल होते रहेंगे।

जैसे सम्राट अशोक ने धर्म ब्रह्मदेश भेजा, तो उसे ले जाने वाले अरहंत भिक्षु सोण और उत्तर को लोग भले भूल गये, परंतु अशोक को कदापि नहीं भूलते। अशोक उनका धर्मराजा है, हृदय-सम्राट है। उसके प्रति उन सब के मानस में असीम कृतज्ञता बनी रहनी स्वाभाविक है! इसी प्रकार जिन्होंने यह कल्याणकारी विद्या भेजी, उन धर्मेश धर्मगुरु सयाजी ऊ बा खिन के प्रति कृतज्ञता का भाव साधकों में सदा जागता रहे। वे यदि इस महान संत के बारे में कुछ जाने भी नहीं, और उन्हें याद भी नहीं करें तो मैं समझता हूं कि यह उनकी घोर कृतघ्नता ही होगी। आगामी २००० वर्षों तक उनका स्मरण कायम रहे और उनके प्रति कृतज्ञता का भाव जागता रहे, इसीलिए उनकी स्मृति में स्नेह और सद्भावना के प्रतीक स्वरूप इस विशाल **विश्व विपश्यना पगोडा** का निर्माण किया गया है। ताकि जब भी कोई इसे देखे तब याद करे कि ऐसा एक धर्मेश धनकुबेर जन्मा जिसने असीम करुणापूर्वक अपने देश के बाहर यह कल्याणकारी विपश्यना विद्या भेजी। हम उस महान संत के प्रति सदैव कृतज्ञ रहेंगे।

परंतु जब मैं देखता हूं कि लोग मेरे गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन को भुला कर, मेरा गुणगान करते हैं और मेरा आभार मानते हैं तब मेरे मानस में कवि रहीम का यह एक दोहा उभरता है। कवि रहीम बादशाह अकबर का सिपहसालार था। उसके पास अपार धन था और वह अत्यंत दानी स्वभाव का भी था। प्रतिदिन अपने निवास के चबूतरे पर बैठ कर मांगने वालों को उदारतापूर्वक मुट्ठी भर-भर कर सिक्के बांटा करता था। लेकिन उस समय वह अपनी आंखें और सिर नीचा रखता था। लोगों द्वारा इसका कारण पूछे जाने पर उसने उत्तर दिया--

देवनवारो और है, देवत है दिन रैन।
लोग भरम हम पर धरैं, या ते नीचे नैन।।

-- वह मानता था कि वस्तुतः देने वाला तो परमात्मा है, लेकिन लोग भ्रमित होते हैं कि मैं दे रहा हूं। इसलिए संकोच के मारे आंखें नीची हो जाती हैं।

पिछले इकतालीस वर्षों में दुनियाभर के नब्बे (९०) देशों में, ५९ भाषाओं में, विश्वभर के १६४ विपश्यना केंद्रों में, सभी संप्रदायों में से प्रशिक्षित किये हुए लगभग १२०० विपश्यनाचार्यों द्वारा विपश्यना विद्या सिखायी जा रही है और अब तक लगभग पंद्रह लाख (१५,००,०००) से अधिक लोग इससे लाभान्वित हुए हैं तथा नित नये-नये साधकों एवं केंद्रों का विस्तार होते जा रहा है। ये भी पूज्य गुरुदेव द्वारा मुझे दिये गये प्रकाश को प्रसारित कर रहे हैं। जब भी ये साधक-साधिकाएं धर्मदान का श्रेय मुझे देकर अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं तब मेरा मानस भी ऐसे ही भावों से भर उठता है कि यह धर्मदान तो महान गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन ही दे रहे हैं। उनका उपकार मानना न भूलें! उनके प्रति कृतज्ञता जगानी न भूलें!

आज **गुरु-पूर्णिमा** के शुभ अवसर पर यही मेरा धर्मसंदेश है! इस कृतज्ञता ज्ञापन से सब का मंगल हो! सबका कल्याण हो!

कल्याणमित्र,

सत्यनारायण गोयन्का

Registered No. NSK/46/2009-2011 | WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011

नये उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री रुद्रदत्त तिवारी, लखनऊ (धम्म लक्खण की सेवा में क्षेत्रीय आचार्य की सहायता)

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री महेशकुमार गुप्ता, गाजियाबाद
२. श्री रामपाल सिंह चौहाण, पानीपत
३. श्री राकेश सिंह बिसन, जम्मू
४. श्री कपिलनाथ साहू, रायपुर
५. श्री हेमबज्र शाक्य, नेपाल
६. सुश्री शोवा सिल्पकार, नेपाल
७. श्री कृष्णदास राजकर्णीकर, नेपाल
८. सुश्री नलिनी शाक्य, नेपाल
९. श्री माधवप्रसाद धुंगण, नेपाल
१०. श्री धर्मराज शाक्य, नेपाल
११. श्री कमलकुमार गोयल, नेपाल
१२. श्रीमती शुभलता श्रेष्ठ, नेपाल
१३. श्री अर्जुन गिरि, नेपाल
14. Mr. Lee Kwok On, *Korea*
15. Mr. Brian Wagner, *South Africa*
16. U Maung Maung Sein, *Myanmar*
17. U Thant Sin, *Myanmar*
18. U Aung Myat Cho, *Myanmar*
19-20. U Sai Hsai Leng & Daw Nan Khin Htay, *Myanmar*

बालशिविर-शिक्षक

१. श्रीमती ए.पी. राजेश्वरी, चेन्नई
२. श्रीमती के. शिजा, चेन्नई
३. श्री शांताराम गायकवाड, फल्टन
४. श्री विजय जांबले, फल्टन
५. श्रीमती नीरा कपूर, नई दिल्ली
६. सुश्री पूनम अटेय, दिल्ली
७. श्रीमती सुधा अग्रवाल, गाजियाबाद
८. श्रीमती सीमा, गाजियाबाद
९. श्री चरण सिंह, गाजियाबाद
१०. श्री यशवंत सिंह, गाजियाबाद
११. सुश्री सूरजकुमारी नेगी, सोलन
१२. श्री गोपाल सिंह नेगी, किन्नौर
१३. श्री डेचेन वाग्मो, लेह-लद्दाख
१४. डॉ. (श्रीमती) रिंचेन वाग्मो, लेह-लद्दाख
१५. डॉ. थिनलास टॉशी, लेह-लद्दाख
१६. श्री सोनम रिचेन (रतन), लेह-लद्दाख
१७. श्रीमती डेचेन रिंचेन, लेह-लद्दाख
१८. श्रीमती लोब्जांग छोसडोल, लेह-लद्दाख
19. Mr Charith Fernando, Sri Lanka;
20. Mrs. K. W. Jayanthi Gunasekara, Sri Lanka;
21. Mr. Deng Lin, China;
22. Mrs Luo Fan, China
23. Ms. Tang Xian Jun, China
24. Mr. Julio Hervas, Spain
25. Mr. Carlos Pelaez, Spain

दोहे धर्म के

नमन करूं गुरुदेव को, कैसे संत सुजान!
कितने करुणा चित्त से, दिया धरम का दान!!

पथ भूला दिग्भ्रम हुआ, भटक रहा अकुलाय।
धन्य! धन्य! गुरुदेव ने, सतपथ दिया दिखाय॥

सद्गुरु की करुणा जगी, दिया धर्म का सार।
संप्रदाय के बोझ का, उतरा सिर से भार॥

धन्य! धन्य! गुरुवर मिले, ऐसे संत महान।
छूटी मिथ्या कल्पना, छूटा मिथ्या ज्ञान॥

गुरुवर! अंतरजगत में, जगी सत्य की ज्योत।
हुआ उजाला, धर्म से, अंतस ओतप्रोत॥

आज नमन का दिवस है, अंतर भरी उमंग।
श्रद्धा और कृतज्ञता, विमल भक्ति का रंग॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

घणा दिनां रुळतो फिर्‌यो, आंधी गळियां मांय।
गुरुवर दीन्यो राजपथ, पाछो मुड़णो नांय॥

जनम जनम रै पुन्य स्यूं, सतगुरु मिल्यो महान।
पंथ मिल्यो सद्धरम रो, सुख री मिलगी खाण॥

गांठ-गँठीलो ही बण्यो, पढ पोथ्यां रो ग्यान।
आखर आखर सुळझग्या, सद्गुरु मिल्यो सुजान॥

अक्खय धन गुरुवर दियो, बण्यो किसो धनवंत।
बांटत बांटत बांटतां, धन ना रंच घटंत॥

गुरुवर! संपद धरम री, बांट्यां कम नहिं होय।
दिन दिन दूणी ही हुवै, रात चौगुणी होय॥

पारस परसै लोह नै, सुवरण देय बणाय।
गुरुवर परस्यो लोह नै, पारस दियो बणाय॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422007. **बुद्धवर्ष** 2555, **आषाढ़ पूर्णिमा**, **15 जुलाई, 2011**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71.** **Registered No. NSK/46/2009-2011**

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712, 243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org